हिंदी और स्वाधीनता आंदोलन

संपादक
डॉ. चन्द्रशेखर राम
डॉ. रामकिशोर यादव
डॉ. निधि सिद्धार्थ

श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली-110058

श्री नटराज प्रकाशन

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गांवड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 011-22941094
Email : [illegible]

शाखा
[illegible]
पुलिस चौकी,
[illegible]
उत्तर प्रदेश-202001
फोन : 0571-2417843

ISBN : 978-81-94402-5-2
© प्रकाशक
प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : 595.00 रुपये

शब्द संयोजन : कम्प्यूटेक, दिल्ली-110053
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रित: HINDI AUR SWADHINTA ANDOLAN
by Dr. Chandra Shekhar Ram, Dr. Ramkishor Yadav, Dr. Nidhi Sidharth

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गांवड़ी एक्स. दिल्ली-110053 से टी.एस. यादव द्वारा प्रकाशित, कम्प्यूटेक द्वारा पृष्ठ सज्जा, शशिसिंह द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110091 द्वारा मुद्रित।

भूमिका

राष्ट्र के निर्माण में भाषा की महती भूमिका है। भाषा के बिना हम किसी राष्ट्र की परिकल्पना नहीं कर सकते। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसमें हिन्दी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाएँ भी शामिल हैं। स्वाधीनता आंदोलन के विविध आयाम हैं। इसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सभी पहलू शामिल हैं। इन समग्र बिन्दुओं को मिलाकर ही आंदोलन की विशद विवेचना संभव है। इस प्रक्रिया में भारत के सभी प्रमुख साहित्यकार, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार तथा देश के नागरिकों का बहुमूल्य योगदान है। परिणामस्वरूप भारत का स्वाधीनता आंदोलन एक सशक्त आंदोलन का रूप ले सका। यह तभी संभव हो पाया जब भारत के जन–जन का सहयोग मिला। इसमें स्त्री–पुरुष एवं सभी वर्गों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

सन् 1857 के बाद भारत के लोग स्वतंत्रता के लिए कृत संकल्पित हो गये। अंग्रेजों द्वारा किये गए आधारभूत संरचनात्मक विकास के कारण स्वाधीनता आंदोलन का रूप तीव्र हो गया। अंग्रेजों ने रेल सेवा, डाक सेवा तथा छापेखाने का विकास करके भारत के लोगों में एक नई चेतना पैदा की। परिणामस्वरूप भारत के लोगों तक पहुंचना सुगम हो गया। स्वाधीनता की लड़ाई में विभिन्न संगठनों को शामिल करना आसान हो गया। इस प्रकार जनता की सक्रिय भागीदारी बढ़ती गई। प्रमुख साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से जनता को गुलामी से मुक्ति दिलाने में मदद की।

स्वाधीनता आंदोलन के सूक्ष्मतम बिन्दुओं को रेखांकित करने के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली से वित्तीय सहायता प्राप्त कर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 19–20 फरवरी, 2018 को किया। यह संगोष्ठी कॉलेज के सभागार में सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में देश के महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों से आये–प्रमुख विद्वानों में प्रो. विभूतिनारायण राय, पूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय,